ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 65-68

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-II, Issues-17, YEAR- Sept. -2020

भीष्म साहनी के उपन्यास 'बसंती' में एक अनुशीलन (विशेष संदर्भ निम्न मध्यवर्गीय संघर्षशील नारी)

किरन यादव

शोध अध्येता– हिन्दी विभाग, राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गाजीपुर (उ0 प्र0), **सम्बद्ध**
वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर (उ0प्र0), भारत

Received- 07.08.2020, Revised- 13.08.2020, Accepted - 16.08.2020 E-mail: - pkiran200388@gmail.com

सारांश : ***भीष्म साहनी प्रगतिशील लेखक हैं। साहनी जी का कलाकार जिस दृष्टिकोण से जीवन, समाज और उनके विभिन्न अंगों–प्रत्यंगों को देखता है और उन्हें उसी रूप में जनता के समक्ष प्रस्तुत करता है। भीष्म जी के अपने सिद्धान्त और मान्यताएँ हैं, वे समाज में क्रान्ति लाकर इसे नवीन रूप देना चाहते हैं। जीवन को उसकी विविधता एवं समग्रता के साथ व्यापक फलक पर अभिव्यक्त करना चाहते हैं। साहित्य समाज का संवाहक है एवं समाज साहित्य का। दोनों एक दूसरे के पूरक हैं। दोनों में से किसी एक को जानने के लिए दूसरे को भली–भांति जानना अनिवार्य है। हिन्दी साहित्य में भीष्म साहनी के उपन्यास 'बसंती' का अनुशीलन प्रस्तुत करने के लिए उसके सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक पहलुओं पर विचार करना आवश्यक होता है।***

कुंजीभूत शब्द– प्रगतिशील, कलाकार, दृष्टिकोण, अंगों–प्रत्यंगों,मान्यताएँ, विविधता, समग्रता, अभिव्यक्त ।

साहनी जी की लम्बी रचना यात्रा में उनके उपन्यास अपना विशिष्ट स्थान रखता है। साहनी जी की उपन्यास यात्रा 'झरोखे' से लेकर 'नीलू नीलिमा नीलोफर' तक फैली हुई है। भीष्म साहनी जी के कुल सात उपन्यास हैं। 'झरोखे' (1967), 'कड़ियां' (1970), 'तमस' (1973), 'बसंती' (1980), 'मैय्यादास की माड़ी' (1988), 'कुंतो' (1993) तथा नीलू नीलिमा नीलोफर उपन्यास है। प्रस्तुत शोधपत्र में भीष्म साहनी के उपन्यास 'बसंती' में निम्नमध्यवर्गीय संघर्षशील नारी पर विचार व्यक्त किया गया है।

'बसंती' भीष्म साहनी का चौथा उपन्यास है। झरोखे, कड़ियाँ, तमस जैसे तीन विभिन्न आयामी उपन्यासों के बाद 'बसंती' का आना साहनी जी के निबंध कथाकार की एक और सृजनात्मक उपलब्धी है। भीष्म जी ने इस उपन्यास में एक ऐसी लड़की का चित्रण किया है, जो मजदूरी करने के लिए महानगर में आए ग्रामीण परिवार की कठिनाईयों के साथ–साथ बड़ी होती है। यह उपन्यास निम्नवर्गीय मजदूर वर्ग की जिंदगी पर केन्द्रित है। इसमें विशेष रूप से महिलाओं की जिन्दगी पर महानगरीय चमक–दमक, आधुनिक जीवन की रौनक और भागती हुई जिन्दगी में कुछ देर ठहरकर सोचने पर, यह उपन्यास मजबूर कर देता है। बसंती इस उपन्यास की मुख्य नायिका है। बसंती के नाम पर ही इस उपन्यास का नाम 'बसंती' रखा गया है। बसंती निम्न मध्यवर्गीय समाज में पैदा और बड़ी होती है। वह अपने अनुभव से जिंदगी जीना सीखती है। जिंदगी से वह लगातार संघर्ष करती उपन्यास की पात्र है। अपनी जिंदगी को वह कल की बजाय आज में जीने के लिए उपन्यास की सशक्त पात्र है। कबीरदास की यह पंक्ति जो समय की महत्ता बताती है। वह यहां चरितार्थ होती है– "काल करे सो आज कर, आज करै सो अब"। जिंदगी को लेकर उसका यह नज़रिया उसके सामाजिक व आर्थिक परिवेश की देन है। वह निम्नवर्गीय परिवार से ताल्लुक रखती है।

कोई भी प्राणी यदि संसार में जन्म लेता है, तो उसे किस स्थान पर, किसके घर, कब जन्म लेना है यह उसके हाथ में नहीं होता, परन्तु जन्म मिला है, उसका पूरा उपभोग लेना वह चाहता है। उसे जीवित रहने के लिए परिस्थिति के साथ जूझना पड़ता है। जिस समाज में उसका जन्म हुआ उस समाज के साथ और दूसरे समाज के साथ वह संघर्ष करता हुआ अपने आपको जीवित रखता है। डॉ0 जालिंदर इंगले के शब्दों में "मानव जाति का भी ठीक इसी तरह है, वह अपने समाज में रहकर जीविका के लिए संघर्ष करता है। जीवन में उसकी अनेक आवश्यकताएं रहती हैं, परन्तु उनमें से कुछ नितांत आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए वह मेहनत, श्रम आदि के द्वारा झगड़ता है।"1 वह चाहे स्त्री हो या पुरूष दोनों ही परिस्थिति में जीवन संघर्ष पर उतारू हो जाते है। जातिगत द्वेष, आसक्ति उसे जीवन संघर्ष करने के लिए मजबूर करती है।

बसंती भी आजीवन संघर्ष करती है। यह निम्नवर्गीय समाज से है। वह श्रम के जरिये अपना जीवन यापन करना जानती है। यह जिंदगी से बहुत प्रेम करती है और आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर है। बसंती की कथा राजस्थान से जुड़ी हुई है। राजस्थान में एक बार सूखा पड़ता है और वहां के राज–मजदूर, धोबी, नाई, मिस्त्री तथा चाय–पान का धंधा करने वाले लोगों का पलायन सीधे

PIF/6.500 *ASVS Reg. No. AZM 561/2013-14*

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-II, Issues-17, YEAR- Sept. -2020

राजधानी (दिल्ली) की ओर होता है। दिल्ली पहुंचकर वे आसमान के नीचे ही अपना डेरा डालते हैं और फिर एक–एक झोपड़िया खड़ी होने लगती है। पूरा मैदान एक बस्ती का रूप ले लेता है। उस बस्ती के इर्द–गिर्द उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब और अन्य प्रान्तों के मजदूर भी अपनी झोपड़ी बनाकर रहने लगे थे। जमीन सरकारी थी और बस्ती का निर्माण अवैध ढंग से हुआ था। एक दिन यह आदेश सुना दिया जाता है कि तुम्हें यहां से निकलना होगा, बस्ती खड़ी नहीं रह सकती। बसंती अपने छः भाई–बहन में पांचवे नं0 की संतान है। बसंती का पिता जो चौधरी नाईगिरी का काम करता है, अपने दो बेटियों का विवाह करके उनसे मुक्ति पा ली थी, और बसंती को 60 वर्ष के लंगड़ें दर्जी बुलाकी के हाथों बेच चुका है। "बारह सौ होंगे। कहेगा, तो आज ही उसके हाथ पीले कर दूँगा। चार सौ पेशगी अभी दे दे, पूरे एक हजार हो जायेंगे, दो सौ तुम घर आ जाने पर दे देना।"[2] बसंती बूढ़े लंगड़े से शादी करने की अपेक्षा दीनू के साथ भागना उचित समझती है। वह अपने माँ–बाप के सामने साइकिल पर बैठकर उनके सामने से गुजरने का हौसला रखती है यह जानते हुए कि देखे जाने पर मार पड़ेगी।

बसंती उपन्यास मूलतः सामाजिक समस्याओं को लेकर लिखा गया है। इसलिए सामाजिक वातावरण का चित्रण विस्तृत रूप से मिलता है। 'बसंती' उपन्यास में निम्नवर्ग की आर्थिक स्थिति बहुत ही सोचनीय एवं दयनीय है। रोज का कमाना रोज का खाना है। बसंती निम्नवर्गीय परिवार से है। ऐसा परिवार जो महानगर की झुग्गी–झोपड़ियों में रहता है। जिनके जीवन का प्रत्येक दिन अपने आप पूरा है, क्योंकि अगले दिन क्या होगा वह खुद नहीं जानता। निम्न वर्ग की आर्थिक दशा का एक उदाहरण द्रष्टव्य है– "धरती तो भैया, भगवान की है, इस पर जो बैठे, कोई मनाही नहीं है, पर यहाँ पर तो हमारी भी दो जून की रोटी का जुगाड़ नहीं हो पाता। तुम यहाँ बैठने लगे, तो न तुम्हारे हाथ कुछ लगेगा न हमारे।"[3] इस उपन्यास में उच्च–मध्यवर्ग की आर्थिक स्थिति का भी चित्रण किया गया है। यह वर्ग सम्पन्न होता है, ये लोग नौकर रखते हैं, बर्तन चौका करने वाली नौकरानियां रखते है। आधुनिक सजावट से इनका परिवार हर प्रकार से भरा–पूरा रहता है। घर में टी0 वी0, कूलर, फ्रीज आदि संसाधन उपलब्ध होते हैं। स्त्रियों के लिए सौन्दर्य प्रसाधन की सभी सामग्रियाँ मौजूद होती है। बच्चों के लिए खेलने की सामग्री भी उपलब्ध रहती है। उच्च–मध्यवर्ग का एक उदाहरण यहां द्रष्टव्य है–

"बालों में तेल लगा दूँ, बीबी जी?" "नहीं।"
"झाड़ू लगा दूँ, बीबी जी, बरामदा गंदा हो रहा है, चाय बना दूँ, बीबी जी। जा बना ला चाय। अपने लिए भी बना ला, मेरे लिए भी। चीनी कम डालना।"[4]

इस प्रकार के मध्यवर्ग के लोगों की जीवन शैली उच्चवर्ग के लोगों जैसे कुछ–कुछ थी। इन्हें खाने–पीने, रहने–पहनने, काम करने आदि की कोई चिंता नहीं थी। इनका जीवन खुशियों से भरा था। यहां पर साहनी जी अपने उपन्यास के माध्यम से यह स्पष्ट करना चाहते है कि आर्थिक वैषम्य समाज में व्याप्त था, जो निम्न वर्ग व दलित वर्ग था, जो आर्थिक कठिनाइयों से जूझ रहा था, दो जून की रोटी भी उसे मिलना दुर्लभ थी। जबकि मध्यम वर्ग का समाज अधिक सुख–सुविधाओं से सम्पन्न था।

इस उपन्यास में निम्नवर्गीय समुदाय के लोगों का चित्रण किया गया है। ये वे लोग है जो गांव में सूखा, अकाल और भुखमरी की जहालत को छोड़कर शहरों में भाग आये है। इन्हीं निम्नवर्गीय लोगों को आधार बनाकर साहनी जी ने सामाजिक और आर्थिक विसंगतियों को बड़ी ही सहजता के साथ उभारा गया है। आर्थिक अभाव के कारण बसंती का बाप चौधरी अपनी बेटियों को बुजुर्ग के हाथ बेचने पर मजबूर है। समाज इस विडम्बना को लेखक ने बसंती के माध्यम से स्पष्ट किया है– "हमारा बापू बेटियाँ बेचता है? सच, बीबीजी मेरी बड़ी बहिन का ब्याह भी गाँव में किसी बूढ़े के साथ कर दिया। उसके आठ सौ रूपये लिए।"[5] बुजुर्ग व्यक्ति के हाथ लड़की बेच देने का मतलब यह नहीं है कि किसी माँ–बाप को अपने बच्चों से प्रेम नहीं रहता बल्कि उसकी जड़ में कुछ और ही छुपा होता है। पूंजीवाद के विकास के कारण सर्वहारा निम्नवर्ग आर्थिक विपन्नता के कारण अपनी बेटियों को अधिक उम्र के बूढ़ों के हाथ में सौंपकर पैसा लेने को मजबूर है। इसका कारण निम्नवर्गीय लोगों की आर्थिक मजबूरी।

'बसंती' उपन्यास में चौधरी जैसा पिता 1500 रूपये में अपनी बेटी लंगड़े बूढ़े बुलाकी को बेच देता है, तो दीनू जैसा धोखेबाज, लम्पट और स्वार्थी पति एक बार बसंती को बरडू के हाथ बेचकर भाग जाता है। दूसरी बार बसंती तथा उसके बच्चे पप्पू को छोड़कर एकदम चला जाता है और जब साथ रहता है तब भी उसके व्यवहार में किसी कोमल भावना का, किसी अपनेपन या आत्मीयता का भास मिला हो, ऐसा नहीं था। दीनू तब भी बसंती का शरीर ही निचोड़ता था और वह जब भी मना करती तो तमककर बोलता "एक झापड़ दूंगा, तुझे लाया किसलिए हूँ।" परंतु इतना शोषण होने पर भी बसंती किसी प्रकार की हार नहीं मानती है, वह षोशण की जंजीरों व सामंती मूल्यों के बंधनों को तोड़ते हुए, विद्रोहात्मक स्वर अपनाते हुए नारी चेतना की आवाज बुलंद करती है। श्याम कश्यप के शब्दों में

PIF/6.500 *ASVS Reg. No. AZM 561/2013-14*

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-II, Issues-17, YEAR- Sept. -2020

"बसंती, जिसे अपने हाथ की कमाई पर नाज है और खुद किसी पर कभी आश्रित नहीं रही, बल्कि घरों में चौका–बर्तन करके स्वयं दूसरों को पालने वाली औरत है, सारे सामंती और पूँजीवादी मूल्यों और संस्कारों पर बेरहमी और साहस के साथ प्रहार करती है।"[6]

इस उपन्यास में 'बसंती' अत्याचार, अन्याय तथा शोषण के विरूद्ध संघर्ष की प्रेरणा देने वाले पात्र के रूप में आयी है। वह पूंजीवादी और सामंती नैतिकता के बंधन कभी भी और कहीं भी स्वीकार नहीं करती हैं वह स्वतंत्र रहना चाहती है। अपनी मुक्ति के लिए निरंतर संघर्ष करती हुयी दिखायी देती है। डॉ0 जालिंदर इंगले के शब्दों में "नारी चाहे उच्च वर्ण की हो चाहे निम्न वर्ण की उसका मौका मिलते ही शोषण हो रहा है। उच्च वर्ण की नारी निम्न वर्ण की नारी का शोषण करती है। उच्च वर्ण का पुरूष निम्न वर्ण की नारी का शोषण करता है। इतना ही नहीं समस्त नारी जाति का प्रस्थापित पुरूष जाति से यौन शोषण होने की घटनाएँ कुछ कम नहीं है।"[7] 'बसंती' उपन्यास में बसंती और दीनू का दाम्पत्य जीवन कड़वाहट भरा है। दीनू स्वच्छंद और रोमांटिक प्रवृत्ति का आदमी है। वह स्त्री को भोग–विलास का साधन मात्र समझता है। बसंती को हॉस्टल में रखैल की तरह रखता है और उससे जब चाहा जैसी मौज–मस्ती करता है। वह कहता है विवाह किसने किया है तेरे साथ? ऐसा व्यवहार करने पर भी बसंती उसे जी जान से चाहती है। वह अपना सब कुछ उस पर न्यौछावर कर देती है। दिन–राज परिश्रम करके घर का सारा खर्च चलाती है। परन्तु दीनू उसके लिए क्या करता है? सर्वप्रथम 300 रूपये में बरडू को बेच देता है और बाद में एक दिन उसे पप्पू (बसंती का बेटा) के साथ अकेली छोड़कर चला जाता है और वापस लौट कर नहीं आता है। निम्न वर्ग में जन्म लेने वाली बसंती शहर के वातारण में इतना घुल–मिल गयी है कि उसकी आँखों में उच्च वर्ग के सपने झलकने लगते है। दो जून की रोटी जुटा पाने में अक्षम पिता पुत्री धनवान लोगों की तरह फिल्में देखना, फोटो खिंचवाना, पावडर, लिपिस्टिक, बिंदी और अच्छे–अच्छे कपड़ों का शौक पाले एक ऐसे रास्ते पर चल पड़ती है, जहाँ ऐसे वर्ग के लिए बर्बादी के अलावा और कुछ शेष नहीं मिलता। शायद उसके पिता के ह्रदय का दर्द इस बात का प्रमाण है– "लड़की को शहर की हवा लग गयी है साहिब।" हाथ बांधे–बांधे चौधरी ने कहा, "हमारे घर में और भी लड़कियाँ हैं। सब अपने–अपने बाल–बच्चों के साथ घरों में बसी हैं, यही एक कुलच्छणी।"[8] बसंती स्वच्छंद प्रकृति की लड़की है। वह किसी भी प्रकार के बंधन में नहीं बंधना चाहती जो उसकी इच्छा के विरूद्ध हो। फिल्में देख–देखकर उसके अंदर की औरत जग उठती है। वह अपने बाप की इच्छा के विरूद्ध दीनू के साथ प्रेम करती है और उसी के साथ भाग जाती है। वस्तुतः दीनू के लिए बसंती एक ऐशो–आराम की वस्तु है, परंतु इसी के विपरीत बसंती के लिए दीनू उसका सर्वस्व है, पति, प्रेमी और भी सब कुछ। वह उससे अपने माथे में सिंदूर भरवाकर पत्नी बन जाती है और वह बार–बार अपने माँ–बाप और सगें–सम्बन्धियों के सामने से होकर निकलना चाहती है, उन्हें ठेंगा दिखाने के लिए कि देखो मैं तुम्हारी आँखों के सामने भागकर चली जा रही हूँ और तुम मेरा कुछ भी नहीं बिगाड़ सकते। लेखक ने यहां यह स्पष्ट करने का प्रयास किया है कि सड़ी–गली मान्यताओं के विरोध में बसंती जैसी औरत का खड़ा होना इस बात की पुष्टि करता है कि समाज में फिल्मों की सार्थकता महत्वपूर्ण है।

बसंती ईश्वर की मर्जी के सामने एक बार फिर से कमजोर पड़ जाती है। दीनू का दिल जब बसंती से भर जाता है तो वह उसे गर्भवती करके स्वावलंबी बसंती को बरडू के हाथ तीन सौ रूपये में बेचकर अपने गाँव चला जाता है। बसंती के पेट में दीनू का बच्चा रहता है। जब बरडू उसे बताता है कि दीन ने उसे तीन सौ रूपये में बेच दिया है, उसका जो विश्वास दीनू के प्रति अडिग था, वह चकनाचूर हो जाता है। श्यामाबीबी का यदि सहयोग मिलता भी है तो एक बार पुनः अपने बाप के इरादों को शिकार हो जाती है। गर्भवती बसंती का विवाह बूढ़े बुलाकीराम से करके उस बूढ़े दर्जी के विश्वास को दृढ़ कर देता है। "मैं कहूँ बसंती रानी आयेगी, एक दिन जरूर आयेगी।"[9] परन्तु जब दीनू अपनी पत्नी के साथ दिल्ली लौट आता है तो बसंती अपने बच्चे के साथ एक बार पुनः उसके पास भाग जाती है। बसंती के स्वभाव की निःस्वार्थ सरलता और परिस्थितियों के अनुसार बहुत जल्द खुद को ढाल लेने की आदत ही उसे और से विशेष बनाती है।

बसंती ने एक ऐसा उदात्त और ममतामय, ऐसा संघर्षशील और शक्तिशाली 'टाइप' चरित्र प्रदान किया है जो जीवन में अपने भरपूर मौजूदगी के बावजूद साहित्य और कला की दुनिया में प्रायः दुष्कर है। बसंती जो सारे सामंती और पूंजीवादी मूल्यों और संस्कारों पर बेरहमी और साहस के साथ प्रहार करती है। मर्द और औरत के रिश्तों और परिवार तथा सामुदायिक जीवन के शोषण और तमाम दमनकारी शक्तियों को बसंती जैसी दृढ़ता के साथ चुनौती देती है, वह हिन्दुस्तान में एक सर्वथा नई औरत की उभरती हुई शक्ल है– सारे पतनशील सामाजिक संबंधों और आर्थिक दासता के बंधनों को तोड़ती हुयी बराबरी के दावेदार के रूप में। लेकिन इस चट्टानी दृढ़ता के नीचे बसंती एक

PIF/6.500 *ASVS Reg. No. AZM 561/2013-14*

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-II, Issues-17, YEAR- Sept. -2020

निहायत कोमल और अपनी जड़ों तक मानवीय चरित्र भी है, जिसकी सभी खूतियों का भीष्म जी ने अपनी पूरी कलात्मक सामर्थ्य और सर्जनात्मक प्रतिभा के साथ सफलता पायी है।

'बसंती' निम्नवर्गीय मजदूर वर्ग की प्रवृत्तियों के साथ–साथ शहरी हवा के कारण उच्चवर्ग और मध्यवर्ग के संस्कारों से भी प्रभावित है। वह अपने वर्ग के चरित्र के हट जाने के कारण दर–दर की ठोकर खाती है और आश्रयहीनता की स्थिति में पहुंच जाती है। अंततः एक बार पुनः निराश्रित होने पर अपने पिता के घर वापस जाने की सोचती है। अतः हम कह सकते है कि "न तो विषमताएं बसंती का पीछा छोड़ती थीं, और न बसंती का अपने देखने वाला स्वभाव बदल पाता था।"[10]

'बसंती' दिल्ली जैसे महानगर की झुग्गी–झोपड़ी में पली है। उसका जीवन झुग्गी–झोपड़ी से जुड़ा है। जिस प्रकार झुग्गी–झोपड़ियों को बार–बार उजाड़ा जाता है, उसी प्रकार से बसन्ती का जीवन भी बार–बार उजड़ता है। अपनी प्रबल जिजीविषा के बल पर लगातार संघर्ष करने वाली यह लड़की अपना उदाहरण स्वयं है। लेखक ने "बसंती के रूप में एक उदात्त, ममतामयी, संघर्षशील और शक्तिशाली चरित्र प्रदान किया है, जो हिंदी साहित्य और कला जगत् में प्रायः दुर्लभ ही नजर आता है।"[11] बसंती बड़ी से बड़ी मुसीबतों को 'तो क्या है बीबीजी' कहकर ऐसा टाल जाती है, जैसे कुछ हुआ ही न हो लेकिन जब उसके सहनशक्ति का विस्फोट होता है तो बड़ी हिम्मत के साथ वह खड़ी हो जाती है और पूरे जोश के साथ विरोध करती है। 'बड़ा आया बेचने वाला। मेरे पेट में अपना बच्चा देकर मुझे बेचने चला था, हरामी, बेशर्म, बदजात।' दीनू उसे धमकाता है तो वह गरजती है, "मैं तेरी आँखे खींच लूँगी, तू समझता क्या है? लगा तो हाथ मुझे।"[12] जब बसंती को यह पता चलता है कि दीनू शादी–शुदा है वह सोचने लगी "हरामी ने बताया तक नहीं कि उसके घर में बीवी है–बीवी है तो क्या? मैं उसके पीछे मारी–मारी तो नहीं फिरूँगी।"[13]

बसंती उपन्यास में सर्वहारा वर्ग के अलावा मध्यवर्ग के भी चरित्र आते हैं, जो अपने छद्म और भावनाशून्य ह्रदयहीनता के कारण निम्नवर्गीय चरित्रों को उभारने में बेहतर ढंग से मदद करते हैं। लेखक ने इन चरित्रों को बड़ी बारीकी से उभारा है। इनमें से एक हैं श्यामा बीबी, जिनके यहाँ बसंती काम करती थी। श्यामा बीबी की दया बसंती के प्रति इसलिए नहीं थी कि बसंती एक गरीब और असहाय थी, बल्कि गुरूमहाराज के दिए हुए आदेश का प्रतिफल था। लेखक ने मध्यवर्गीय चरित्र का खोखलापन दिखाने का प्रयास किया है।

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि 'बसंती' उपन्यास भीष्म साहनी जी का प्रभावशाली और महत्वपूर्ण उपन्यास है। इस उपन्यास में शहर के उभरते निम्नवर्ग की कहानी कही गयी हैं इसमें हमारे समय और समाज की स्त्री–संघर्ष की कहानी है जो गरीबी के साथ–साथ निरंतर विस्थापन की मार झेलती है। कुछ सुधिजन इसे निम्नवर्ग की स्त्री को केन्द्र में रखकर लिखा गया समर्थशाली उपन्यास भी कहा है। इस उपन्यास में लेखक की सहानुभूति निम्नवर्ग और स्त्रियों के प्रति अपेक्षाकृत अधिक है। बसंती के रूप में लेखक ने एक सषक्त और जीवन्त पात्र का निर्माण करते हैं जो मनुष्यता का सच्चा रूप प्रस्तुत करती है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. समकालीन हिन्दी उपन्यास वर्ग एवं वर्ण संघर्ष, डॉ0 जालिदर इंगले, पृ0 214, चन्द्रलोक प्रकाशन, कानपुर, संस्करण वर्श 2014
2. बसंती, भीष्म साहनी, पृ0 16, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1980
3. बसंती, भीष्म साहनी, पृ0 , राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1980
4. वही पृ0
5. वही पृ0
6. भीष्म साहनी व्यक्ति और रचना, राजेश्वर सक्सेना, प्रताप ठाकुर, पृ0 150
7. समकालीन हिन्दी उपन्यास वर्ग एवं वर्ण संघर्ष, डॉ0 जालिदर इंगले, पृ0 217–2018, चन्द्रलोक प्रकाशन, कानपुर, संस्करण वर्ष 2014
8. भीष्म साहनी उपन्यास साहित्य, विवके द्विवेदी, पृ 189, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, द्वितीय संस्करण 2009
9. वही पृ0 190
10. वही पृ0 191
11. वही पृ0 110
12. बसंती, भीष्म साहनी, पृ0 140–141
13. बसंती, भीष्म साहनी, पृ0 88

*****

PIF/6.500 *ASVS Reg. No. AZM 561/2013-14*